3. मात्रा और शब्द ज्ञान

मात्रा ज्ञान भाषा लेखन का सबसे महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक बिंदु है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि यह जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। इसलिए शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना अत्यंत आवश्यक है। अतः प्रारंभ से ही बच्चों के मात्रा ज्ञान के अभ्यास पर अधिक बल देना चाहिए।

- ❖ शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को बताएँ कि स्वरों की मात्राएँ होती हैं, जो व्यंजनों पर लगाई जाती हैं।
- ❖ **अ से औ** तक सभी 11 स्वरों तथा अन्य वर्ण **अं-अः** की मात्राओं से अवगत कराएँ।
- ❖ बच्चों को बताएँ, **अ** स्वर की कोई मात्रा नहीं होती पर **अ** सभी व्यंजनों में सम्मिलित होता है। बिना **अ** स्वर के सभी व्यंजन आधे होते हैं। जैसे– क् ख् ग् घ् ङ्।
- ❖ पाठ पृष्ठों पर दिए चित्रों तथा अन्य शब्दों के माध्यम से (आ ा) (इ ि) (ई ी) (उ ु) (ऊ ू) (ऋ ृ) (ए े) (ऐ ै) (ओ ो) (औ ौ) तथा अनुस्वार (अं ं), अनुनासिक (ँ) और विसर्ग (अः ः) की मात्राओं के शब्दों का उच्चारण तथा लिखित अभ्यास करवाएँ।
- ❖ मात्राओं वाले शब्दों के उच्चारण पर विशेष बल दें।
- ❖ छोटी **इ** बड़ी **ई** या छोटा **उ** या बड़ा **ऊ** बोलकर बच्चों को मात्राओं का अंतर समझाना अशुद्ध तरीका है। ऐसा न करें बल्कि ह्रस्व और दीर्घ उच्चारण के माध्यम से इन मात्राओं का अंतर समझाएँ।
- ❖ प्रत्येक बच्चे के उच्चारण पर ध्यान दें। यदि बच्चों का मात्रा उच्चारण सही होगा तभी वह सही वर्तनी लिख पाने में सक्षम हो पाएँगे।
- ❖ पाठ अभ्यास करवाने में बच्चों की यथासंभव सहायता करें।